संरक्षण मण्डल :
स्वामी बनवारी द्वाराचार्य जी
स्वामी आत्मानन्द जी, 9358462100
स्वामी अशोकानन्द जी, 9557346475
स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, 9879468277
स्वामी अभयानन्द जी, 8979749840
स्वामी हरिओमानन्द जी, 9479439368
महन्त गौरी शंकर दास जी, 9919219314

संस्थापक-अध्यक्ष :
म.म. स्वामी ईश्वर दास जी, 9412902268

उपाध्यक्ष : ब्रह्मचारी शंकरदास जी, 7830943910

सचिव : स्वामी गणेशानन्द जी, 8958942681

कोषाध्यक्ष : स्वामी सर्वानन्द जी, 7830241288

प्रचार-प्रसार प्रमुख :
स्वामी कमलानन्द जी, 9430436927
स्वामी ऋषभदेवानन्द जी, 9267000748
महन्त साधनानन्द जी, 9897733012
स्वामी नरहरिदास जी

सम्पर्क-सूत्र :
डा. गंगा चंदोला (गौ-सेविका), 9456593633
गोवर्धन शाह जी (गौ-भक्त), 9411744449

गोरक्षार्थ संकल्प

1. प्रतिदिन गोग्रास निकालें, संभव नहीं हो तो गोशाला में सेवाराशि देवें।
2. प्रत्येक व्यक्ति घर, खेत, फैक्ट्रियों, फार्म हाउस आदि में गाय रखें, यदि रखने की संभावना न हो तो गोरक्षाशाला में गाय गोद लेकर उसके रख-रखाव में सहयोग करें।
3. अधिक मूल्य देकर भी देशी गाय के दूध, दही, घी का ही प्रयोग करें।
4. अपने परिजन व बच्चों के जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ एवं सभी मांगलिक कार्य या पुण्यतिथि व श्राद्ध आदि अवसरों पर गोसेवा राशि गोशाला में भेंट करें।
5. शास्त्रों के अनुसार अपनी विशुद्ध आय कृषि, व्यवसाय आदि के लाभ का 10% गो सेवार्थ पुण्य में लगावें।

आपका अनुदान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।

आप अपना अनुदान 'Shree Krishnayan Desi Gauraksha' के नाम निम्न बैंकों में जमा कर सकते हैं-

Punjab National Bank, Haridwar
A/c No. 4694002100000378 IFS-Code : PUNB0469400

State Bank of India, Haridwar
A/c No. 32367244910 IFS-Code : SBIN0010588

Axis Bank, Haridwar
A/c No. 913010046416160 IFS-Code : UTIB0000358

गोशाला का पता : • ग्राम-बसोचन्दपुर (गैण्डीखाता), हरिद्वार-246663 (उत्तराखण्ड)
• ग्राम-सबलगढ़ (भागूवाला), जिला बिजनौर-246732 (उत्तर प्रदेश)
गोशाला सम्पर्क सूत्र : 9760297027, 7060106336
मुख्य कार्यालय : श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
हरिपुर कलाँ, निकट प्रेम विहार चौक, हरिद्वार
जिला देहरादून-249205 (उत्तराखण्ड), दूरभाष : 9760202306
कार्यालय ऋषिकेश : ईश्वर आश्रम, शीशम झाड़ी, ऋषिकेश, टिहरी गढ़वाल।
www.krishnayangauraksha.org / enquiry@krishnayangauraksha.org
www.facebook.com/krishnayangauraksha

॥ गावो विश्वस्य मातरः॥

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥
हरिद्वार

यत्र गावः प्रसन्नाः स्युः प्रसन्नास्तत्र सम्पदः।
यत्र गावो विषण्णाः स्युर्विषण्णास्तत्र सम्पदः॥

अर्थ
जहाँ गायें प्रसन्न रहती हैं, वहाँ सभी सम्पत्तियाँ प्रसन्न रहती हैं।
जहाँ गायें दुःख पाती हैं, वहाँ सारी सम्पदायें दुःखी हो जाती हैं।।

श्रीकृष्णायन

देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति

उत्तराखण्ड की सबसे बड़ी गोरक्षाशाला

प्रिय माताओ, बहनो एवं भाइयो !

गो माता की महिमा और उसके अलौकिक सामर्थ्य के वर्णन से हमारे सभी वेद शास्त्र भरे पड़े हैं। गाय हमारी संस्कृति का मूल केन्द्र है। प्राचीन काल के ऋषि-महर्षियों से लेकर वर्तमान युग तक के सभी आत्मज्ञानी संतों ने अपने अनुभूत ज्ञान से गो-सेवा व गो-भक्ति को सांसारिक और पारमार्थिक उत्थान (कल्याण) का सर्वाधिक सरल और सर्वश्रेष्ठ साधन बताया है। आज भी भारत में गोवंश के पालन-पोषण, सेवा, संरक्षण एवं भक्ति से जहाँ लाखों सद्गृहस्थ परिवार सुख-समृद्धि के साथ-साथ भगवत्प्राप्ति का भी अनुभव प्राप्त कर रहे हैं, वहीं भगवत्प्राप्ति के निमित्त गृहत्यागी विरक्त संत भी गो-माता की सेवा कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर रहेहैं ।

यह सबसे रहस्ययुक्त और महत्त्वपूर्ण बात है कि गो-वंश का तात्पर्य भारतीय नस्ल की गायों से ही है। आज गो-वंश की रक्षा एवं सेवा की महिमा को हम अपने मन, बुद्धि एवं हृदय से लगभग भूल गये हैं, जिसका दु:खद परिणाम है कि दैवी शक्तियों को धारण करने वाले अपने गोवंश को हम स्वयं समाप्त करते जा रहे हैं। सामान्यत: लोग अपने वृद्ध, अनुपयोगी, रुग्ण एवं विकलांग गाय, बैल, बछड़ों को घर से बाहर अनाथ दशा में छोड़ देते हैं या बेच देते हैं, जो अन्तत: गो-वधशाला में ही पहुँचते हैं। यह अनजाने में महापाप ही हो रहा है। केवल आर्थिक दृष्टि से तथा अधिक दूध के लोभ में दोगली एवं जर्सी आदि विदेशी गौओं को अपनाते जा रहें हैं जो क्षणिक आर्थिक लाभ तो दे सकतीं हैं लेकिन उत्तम स्वास्थ्य,समृद्धि, सत्संस्कार और शान्ति नहीं दे सकतीं।

- हम स्वयं को एवं अपने पूर्वजों को मोक्ष एवं भगवत्प्राप्ति का अधिकारी कैसे बना पाएँगे ?
- हम गोरक्षा क्यों करें ? हम गोमाता की रक्षा कैसे एवं किस प्रकार से कर पाएँगे ?
- हम अपने समस्त देवी-देवताओं की पूजा करना चाहते हैं तो यह किस प्रकार संभव हो सकता है?

इन समस्त प्रश्नों का समाधान यह है कि-केवल एक गोमाता की पूजा एवं सेवा कर देने से ही एक साथ 33 कोटि देवी-देवताओं की पूजा सम्पन्न हो जाती है। सर्वे देवा: स्थिता देहे, सर्वदेवमयी हि गौ: (वृ. पाराशरस्मृति) । गोवंश की रक्षा एवं सेवारूपी महाअभियान, जो अक्षय तृतीया 6 मई 2011 ई. में हरिद्वार से प्रारम्भ हुई थी, आज उत्तराखण्ड की सबसे बड़ी गोरक्षाशाला है, जहाँ आज हजारो निराश्रित, विकलांग, वृद्ध, रुग्ण (बीमार) एवं कसाइयों आदि से पकड़ी गई गोवंश की सेवा-सुश्रूषा हो रही है, जहाँ आप गोग्रास (घास-चारे) की व्यवस्था हेतु नियमित अंशदान देकर सहजता से गोहत्या पर पूर्ण विराम लगा सकते हैं।

1. देशी गाय के दूध के वैज्ञानिक-लाभ- भारतीय देशी गायों के दूध में 3000 से अधिक दिव्य रसायन हैं, देशी गाय के दूध में स्थित पोषक तात्त्विक मूल्य विदेशी गायों के दूध की तुलना में प्रचुर मात्रा में है और इसका दूध आरोग्य प्रदायक है। जिसमें कैल्शियम 6 प्रकार के, विटामिन 22 प्रकार के, एमिनोएसिड 11 प्रकार के, फैटिएसिड 4 प्रकार के, जो हड्डियों के विकास के साथ ही कैन्सर, मोटापा, जोड़ों का दर्द, मानसिक रोग, अस्थमा, कोलेस्ट्रॉल, रक्तचाप तथा नेत्र इत्यादि के रोगों से बचाव करते हैं।

2. देशी गाय के घी के वैज्ञानिक लाभ-देशी गाय का घी मस्तिष्क की प्रत्येक नस-नाड़ी तक पहुँच कर स्मरणशक्ति को बढ़ाता है। देशी गाय का घी थाईराईड, हारमोन्स एवं कोलेस्ट्रॉल आदि को नियंत्रित करता है। गाय का घी शुक्र वृद्धि करने वाला, नेत्र ज्योति बढ़ाने वाला एवं हृदय आघात (हार्ट-अटैक) को रोकने वाला है। देशी गाय का घी (कफ-पित्त, वात) तीनों को सम रखता है।

3. देशी गाय के दही-छाछ के वैज्ञानिक लाभ- देशी गाय का दही तथा छाछ बलवर्द्धक जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला, पौष्टिक एवं मधुमेह रोग आदि अनेक रोगों में लाभकारी है। देशी गाय के छाछ एवं दही के बारे में कहा जाता है कि यह देवताओं को भी दुर्लभ है।

4. देशी गाय के गोमूत्र एवं गोबर से लाभ- देशी गाय के गोमूत्र के बारे में विज्ञान बताता है कि यह अकेले 55 रोगों को मिटाने की क्षमता रखता है। मोटापा, रक्त विकार, मानसिक दौर्बल्य, हीमोग्लोबिन असंतुलन, मूत्र सम्बन्धित रोगों, हृदय रोगों एवं पेट से सम्बन्धित सभी रोगों पर प्रभाव के कारण गोमूत्र को अतिमहत्त्वपूर्ण माना गया है। इसी प्रकार गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास है । इसका शरीर पर लेप करने से चर्म रोग ठीक होता है एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता में अविश्वसनीय वृद्धि होती है। गोशाला में एक माह सोने मात्र से क्षय (टी.बी.) रोग पूर्णतया ठीक हो जाता है।

5. विदेशी नस्ल की गाय के दूध के दुष्परिणाम- आजकल भारत में अधिकतर गोशालायें जर्सी, होस्टन एवं रेडिन आदि गाय से दूध का उत्पादन करती हैं किन्तु ये गाय नही कहला सकतीं, क्योंकि इनका मूल उरुस (Urus) नामक जंगली जानवर से है, जिसे जर्मनी में Aurochs बोलते हैं । यूरोप में इस जानवर का शिकार मांस के लिए किया जाता था पर इनका शिकार करना कठिन था इसलिए इस जानवर का भारतीय गाय से क्रॉस ब्रीडिंग कराया गया जिससे गाय के रूप-रंग वाले इस नये जानवर जर्सी-होस्टन और रेडिन आदि की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार इस जाति को विकसित करने में मांस ही हेतु था, न कि दूध। यह बहुत चौंकाने वाला तथ्य है कि यूरोप में आज भी इन जानवरों का दूध सीधा नहीं प्रयोग किया जाता है क्योंकि इनके दूध में Casomorphine नामक जहरीला रसायन होता है जो मानव स्वास्थ्य पर हानिकारक दुष्प्रभाव छोड़ता है। विदेशी गायों के दूध से उच्च रक्तचाप, कैंसर, गठिया, Metabolic Degenerative रोग, Autism, Diabetes type-1 (बच्चों का मधुमेह) एवं मानसिक रोग आदि होते हैं।

देशी गाय के दूध में ममता एवं वात्सल्य है क्योंकि अपने बछड़े के मर जाने के बाद गोमाता रोती रहती है और कठिनाई से दूध देती है। इसका दूध बाल-बच्चे पियेंगे तो अपने माता-पिता और गुरुजनों का आदर करेंगे। जबकि जर्सी गाय बछड़े के मर जाने पर भी खाती रहती है और दूध देती रहती है। इसमें ममता और वात्सल्य न होने से इसका दूध अपने बाल-बच्चों को पिलाने योग्य नहीं है क्योंकि ममता के अभाव में बच्चे अपने माता-पिता एवं गुरुजनों का आदर नहीं कर पायेंगे।

क्षीर सागर के मंथन से भगवान श्री हरि के द्वारा

उत्पत्ति

देशी एवं विदेशी मूल की गायों में अंतर

उत्पत्ति

वर्णसंकर/यूरोप के मांसाहारी उरुस (जंगली पशु) के संकरण द्वारा

देशी गोमाता	अंतर	विदेशी नस्ल (जर्सी, होस्टन, रेडिन आदि)
उभरा हुआ	ककुद (डील)	सीधा
बड़ी	गलकंबल	छोटी
स्पष्ट व मधुर- ॐ एवं अम्बा सदृश	रंभाना	अस्पष्ट (गधे के रेंकने जैसी)
धार्मिक अनुष्ठानों एवं यज्ञों में देशी गाय का ही दूध, दही और घी देवतागण स्वीकार करते हैं।	धार्मिक उपयोगिता	धार्मिक अनुष्ठानों एवं यज्ञों में विदेशी गाय के दूध, दही और घी के प्रयोग से किसी भी फल की प्राप्ति नहीं होती।